Subject :- Sociology Date :- 16/05/2020
Class :- D-II Paper :- Subsidiary

Topic :- सम्प्रदायवाद तथा इसके कारक/कारण
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga
online study material No :- (79)

सम्प्रदायवाद

रैन्डम हाउस डिक्शनरी के अनुसार साम्प्रदायिकता अपने ही जातिय समूह के प्रति न कि समग्र के प्रति तीव्र निष्ठा की भावना है।

डॉ कृष्णदत्त भट्ट के अनुसार सम्प्रदाय का अर्थ है मेरा सम्प्रदाय, मेरा पन्थ मेरा मत ही सबसे अच्छा है। उसी का महत्व सर्वोपरि होना चाहिए। मेरे सम्प्रदाय की तूती बोलनी चाहिए। उसी की सत्ता मानी जानी चाहिए। अन्य सम्प्रदाय हेय है। उन्हे या तो पूर्णतः समाप्त कर दिया जाना चाहिए या यदि वे रहे भी तो मेरे मातहत होकर रहे। मेरे आदेशों को सतत् पालन करें। मेरे मर्जी पर आश्रित रहे। वे पुनः लिखते है, अपने धार्मिक सम्प्रदाय से भिन्न अन्यसम्प्रदाय अथवा सम्प्रदाय के प्रति उदासीनता, उपेक्षा, दयादृष्टि, घृणा विरोध और आक्रमण की भावना साम्प्रदायिकता है जिसका आधार वह वास्तविक या काल्पनिक भय की आशंका है कि उक्त सम्प्रदाय हमारे अपने सम्प्रदाय और संस्कृति को नष्ट कर देने या हमें, जान माल की क्षति पहुँचाने के लिए कटिबद्ध है।

स्मिथ के अनुसार एक साम्प्रदायिक व्यक्ति अथवा समूह वह है जो अपने धार्मिक या भाषा-भाषी समूह को एक ऐसी पृथक राजनीतिक तथा सामाजिक इकाई के रूप मे देखता है। जिसके हित अन्य समूहों से पृथक होते हैं और जो अक्सर उनके विरोधी भी हो सकते हैं।

उपरोक्त तथ्यों से साम्प्रदायिकता की निम्नांकित विशेषताएँ प्रकट होती है:-

1. साम्प्रदायिकता का सम्बन्ध धार्मिक समूहों से है अर्थात् एक धर्म के व्यक्ति अपने को एक सम्प्रदाय से सम्बन्धित मानते हैं किन्तु जहाँ एक धर्म में ही विभिन्न मत-मतान्तर है वहाँ साम्प्रदायिकता या सम्बन्ध एक धर्म मे ही विभिन्न छोटे-छोटे सम्प्रदायों से होता है जैसे- इस्लाम धर्म में ही शिया और सुन्नी तथा हिन्दुओं में शैव, वैष्णव, कबीर, रैदास, शाक्त आदि अलग-अलग धार्मिक सम्प्रदाय है।
2. साम्प्रदायिकता में यह भाव विद्यमान होता है कि अपना ही धर्म श्रेष्ठ है अपनी ही भाषा एवं संस्कृति श्रेष्ठ है।
3. साम्प्रदायिकता मे अन्य धर्मों, भाषाओं एवं संस्कृतियों के प्रति घृणाति-

Ajanta Oxford

रस्कार एवं उपेक्षा के भाव पाए जाते हैं। ये विरोधी भाव ही साम्प्रदायिक तनाव एवं संघर्ष पैदा करते हैं।

4. साम्प्रदायिकता पारस्परिक स्नेह एवं सहयोग के स्थान पर सामाजिक एवं राजनीतिक अलगाव पैदा करती है।

5. साम्प्रदायिकता का आधार लोगों में उत्पन्न यह वास्तविक या काल्पनिक भय है कि अन्य धार्मिक समूह उनके सम्प्रदाय और संस्कृति को नष्ट कर देंगे और जान-माल की क्षति पहुँचायेंगे।

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि साम्प्रदायिकता वह संकीर्ण मनोवृत्ति है जो एक वर्ग अथवा सम्प्रदाय के लोगों में अपने आर्थिक एवं राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए पायी जाती है और उसके परिणाम स्वरूप विभिन्न धार्मिक समूहों में तनाव एवं संघर्ष पैदा होते हैं।

सम्प्रदायवाद के कारण

सम्प्रदायवाद के निम्नांकित कारण या कारक हैं :-

1. ऐतिहासिक कारक (Historical Factor) → यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि मुसलमान बाहर से आये और उन्होंने भारत में अपने धर्म के प्रचार के लिए तलवार एवं जोर-जबर्दस्ती का सहारा लिया। औरंगजेब तथा कई अन्य मुस्लिम शासकों ने लोगों को जबरन मुसलमान बनाया। इस कारण से हिन्दुओं के मन में उनके प्रति घृणा पैदा हुयी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दु और मुसलमान लम्बे समय से संघर्ष करते रहे हैं और परस्पर अनेक पूर्वाग्रहों भय और शंकाओं से ग्रस्त रहे हैं। मुस्लिम लिग की माँग ने भारत के दो टुकड़े किये। भारत का खण्डित होना आज भी कई लोगों को पसन्द नहीं आया। विभाजन के समय दोनों ओर से होने वाले दंगों से हुयी हानियों को कई लोग आज भी नहीं भुला पाए हैं।

2. मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological Factor) → हिन्दु और मुसलमान दोनों में ही एक-दूसरे के प्रति घृणा, द्वेष, प्रतिकार, विरोध एवं पृथक्करण के मनोभाव पाये जाते हैं। इस प्रकार की मनोवृत्ति प्राचीन समय से चली आ रही है। भ्रान्तियों एवं पूर्वाग्रह हिन्दु मुसलमानों की राष्ट्रीय वफादारी में शंका व्यक्त करते हैं। पारस्परिक अविश्वास ने भी साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया है।

3. सांस्कृतिक भिन्नता (Cultural Difference) → साम्प्रदायिकता को जन्म देने में एक महत्वपूर्ण कारक हिन्दु और मुसलमानों की सांस्कृतिक भिन्नता है। दोनों में रहन-सहन, खान-पान, रीति-रीवाज, पहनावे,

धर्म, विचारधारा में बहुत अन्तर है। मुसलमान मूर्तिपूजक नहीं है, मुसलमान एकेश्वरवादी है, हिन्दू बहुदेवत्ववादी में विश्वास करते है, हिन्दू मूलत: एकविवाही है, तलाक एवं विधवा विवाह उनमें नही होता जबकि मुसलमान बहुविवाही है तलाक एवं विधवा पुनर्विवाह का उनमें प्रचलन है। यही नही उनके राष्ट्रीय पीरो, देवी-देवताओं में भी भिन्नता है। यह सांस्कृतिक भेद मन-मुटाव एवं तनाव पैदा करता है।

4. **भौगोलिक कारक** (Geographical Factor) → भौगोलिक कारकों ने भी साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया। भारत में अधिकांशत: निवास का प्रतिमान यह है कि एक ही धर्म, जाति एवं भाषा-भाषी समूह एक ही भौगोलिक क्षेत्र में निवास करते है। इसके परिणामस्वरूप उनके हम समूह में तो सहयोग एवं आत्मीयता की भावना पायी जाती है किन्तु बाह्य समूहों के प्रति घृणा, द्वेष एवं विरोध के भाव पाये जाते है जो कि साम्प्रदायिक तनावों को जन्म देते हैं।

5. **धार्मिक असहिष्णुता** (Religious Intolerance) → विश्व के सभी धर्मों के मूल सिद्धान्तो में अनेक समानतायें हैं, किन्तु छोटे-मोटे विभेद भी है। इन विभेदों के कारण ही एक धर्म को मानने वाले लोग अपने धर्म को दूसरों से श्रेष्ठ समझते हैं। धर्मगुरु, पादरी, पैगम्बर एवं मौलवी अपने अनुयायियों को धार्मिक कट्टरता की शिक्षा देते रहे है, दूसरे धर्म के लोगों को मारना, अपने धर्म का प्रचार करना वे पुण्य मानते है। धर्म गुरुओं द्वारा गलत दिशा-निर्देश करने के कारण भी साम्प्रदायिक तनावों में वृद्धि हुयी है।

6. **राजनीतिक स्वार्थ** (Political Interest) → चुनावों में विजय प्राप्त करने एवं सत्ता हथियाने के लिए राजनीतिक दलों का गठन धार्मिक आधार पर अपने उम्मीदवार खड़े करते हैं और साम्प्रदायिकता के आधार पर वोट माँगते है। उम्मीदवार का चयन करते समय भी इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि जहाँ जिस सम्प्रदाय की बहुलता है वहाँ से उसी सम्प्रदाय का व्यक्ति चुनाव लड़े। मत प्राप्त करने एवं राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नेता साम्प्रदायिकता की आग भड़काते है।

7. **साम्प्रदायिक संगठन** (Communal organization) → जैन, सिक्ख, हिन्दू और मुसलमानों में कई साम्प्रदायिक संगठन पाए जाते हैं। ये साम्प्रदायिक संगठन अपने-अपने मतावलम्बीयों को संगठित करते है और उन्हे दूसरे के प्रति भड़काते है जिससे संघर्ष एवं दंगे होते हैं।

8. **असामाजिक तत्व एवं निहित स्वार्थ** (Anti-Social Elements & Vested-Interest) → साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने में समाज-विरोधी तत्वों

एवं निहित स्वार्थ वालों का भी महत्वपूर्ण हाथ होता है। समाज में कुछ लोग ऐसे होते है जो तनाव एवं संघर्ष की स्थिति पैदा करते है। जिससे उन्हे लूटपाट करने एवं यौन व्यभिचार करने का अवसर प्राप्त हो तथा वे अपने व्यक्तिगत झगड़ों का बदला ले सके। ऐसे लोग होली, दीपावली, रामनवमी, मुहर्रम, ईद आदि के अवसर पर जुलूस आदि पर पत्थर फेकने, रंग छिड़कने, आग लगा देने आदि का कार्य करते है जिससे कि उपद्रव पैदा हो।

9. **धर्मनिरपेक्षता का दुरुपयोग** (misuse of secularism) →
भारतीय संविधान भारत को धर्म-निरपेक्ष राज्य घोषित करता है। इसका अर्थ है भारत मे प्रत्येक धर्म सम्प्रदाय को फलने-फूलने एवं विकास के समान अवसर उपलब्ध होंगे, कोई भी धर्म राज्य धर्म के रूप में स्वीकार नही किया गया है। राज्य के लिए सभी समान है। धर्म-निरपेक्षता का अनुचित लाभ उठाकर कई बार एक धार्मिक समूह ने दूसरे पर अपने आपको थोपने की कोशिश की जिसके परिणामस्वरूप तनाव एवं संघर्ष पैदा हुये।

उपरोक्त सभी कारको द्वारा यह स्पष्ट होता है कि भारत में साम्प्रदायिकता अनेक सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं राजनीतिक कारकों का मिश्रित फल है, आज इसकी जड़े गहराई में जम चुकी है जिसे उखाड़ फेंकने के लिए दृढ़ संकल्प, सच्चाई एवं ईमानदारी पूर्वक प्रयासों आवश्यकता है।

S.N. Choudhary
Marwari college
L.N.M.U